

रस पुं. (तत्.) 1. किसी पदार्थ का तरल सारतत्व, तरल पदार्थ, द्रव जल 2. वनस्पतियों, फलों आदि को कूटने और निचोड़ने से निकलने वाला द्रव, औषधियों, सब्जियों को उबालने से प्राप्त रस 3. फलों को निचोड़ने से प्राप्त होने वाला द्रव 4. पेड़ के तनों से प्राप्त होने वाला तरल पदार्थ जैसे ताड़ वृक्ष से प्राप्त रस जिससे ताड़ी बनती है 5. गाय आदि पशुओं का दुग्ध, गाय के दूध, दही, मक्खन, घी आदि को गोरस कहा जाता है 6. गन्ने की पिराई से प्राप्त होने वाला तरल पदार्थ भी रस अर्थात् गन्ने का रस कहा जाता है 7. पानी में घुले हुए गुड़ या शक्कर से निर्मित शर्बत को भी रस कहा जाता है 8. खाने पीने के पदार्थों से जीभ को जो स्वाद की अनुभूति होती है उसे भी रस कहा जाता है जैसे- बेस्वाद भोजन खाने के बाद कहते हैं कि इसमें कोई रस नहीं आया 9. आनंद के अर्थ में भी रस का प्रयोग होता है जैसे- भोजन में कोई रस नहीं आया, नाटक में कोई रस नहीं आया, उसकी बातों में कोई रस नहीं आया, रस आना, रस बरसना, रस भंग होना, रस में डूबना इसके उदाहरण हैं 10. रस अथवा स्वाद मूलतः छह प्रकार के माने गये हैं- मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय 11. रुचि के अर्थ में भी रस का प्रयोग होता है 12. प्रेम, प्रीति, स्नेह के लिए भी रस का प्रयोग होता है जैसे- सूर स्याम रस भरी राधिका-सूरदास 13. कामक्रीड़ा 14. सौंदर्य 15. उमंग, मस्ती 16. स्थिति (सदा एकहि रस) ढंग, तरीका 17. पारा, पारद 18. खनिज औषध आयुर्वेद में अनेक दवाइयाँ रस कही जाती हैं जैसे- लक्ष्मी विलासरस एकांग वीर रस, मालती रस, यह धातुओं के भस्म से तैयार की जाती है 19. भक्ति भाव का आनंद 20. परमात्मा, ब्रह्म 21. रस एक है परंतु साहित्य में उपाधि भेद से नौ रस माने गए हैं- शृंगार, हास्य, रौद्र, करुण, वीर, वीभत्स, भयानक, अद्भुत, शांत 22. सौन्दर्य, कला, साहित्य के भाव को भी रस कहा जाता है और जिस व्यक्ति में इनके प्रति अनुराग हो उसे रसिक कहा जाता है 23. पुरुष का वीर्य 24. मधुर रस (हंसि बोले गिरिधर रस

बानी) 25. शरीर के अंदर की सात धातुओं में से पहली धातु, भोजन के बाद शरीर में उससे बनने वाला प्रथम रस।

रसकपूर पुं. (तत्.) सफेद रंग की पारायुक्त उपधातु जो औषधीय उपयोग की होती है।

रसकेलि स्त्री. (तत्.) 1. प्रेमक्रीड़ा, कामक्रीड़ा, विहार 2. विनोद, हँसी-मजाक।

रसकेसर पुं. (तत्.) कपूर।

रसकोरा पुं. (तत्.) रसगुल्ला।

रसखीर स्त्री. (तद्.) गन्ने के रस में चावल पकाकर बनाई गई खीर, रसावर।

रसखान पुं. (तत्.) 1. रस का स्रोत 2. आनंद की खान 3. रसपूर्ण 4. मुस्लिम परिवार में जन्मे एक महान कृष्ण भक्त कवि।

रसगंध पुं. (तत्.) गंध रस, बोल नामक गंध द्रव्य।

रसगुल्ला पुं. (तत्.+तद्.) छेने से तैयार की गई रसदार गोल आकार की मिठाई।

रसग्राही वि. (तत्.) काव्य. रस ग्रहण करने वाला, आस्वादक, साहित्य मर्मज्ञ।

रसघन वि. (तत्.) अति सरस, अति स्वादिष्ट पुं. श्री कृष्ण, परमात्मा।

रसज्ञ वि. (तत्.) रस को जानने वाला, रस-ज्ञाता, ललित कला मर्मज्ञ, रसिक पुं. 1. रस मर्मज्ञ व्यक्ति, रसिक व्यक्ति 2. कवि, काव्य मर्मज्ञ, संगीतज्ञ, कलाकार 3. रसायनज्ञ, पारद आदि के योग से औषधियाँ बनाने वाला वैद्य।

रसज्ञता स्त्री. (तत्.) 1. रसज्ञ होने की अवस्था, भाव, गुण, रस मर्मज्ञता 2. काव्य मर्मज्ञता 3. संगीत, कला की मर्मज्ञता 4. निपुणता, कुशलता।

रसता स्त्री. (तत्.) रस का भाव या गुण, रसत्व, सरसता, रसशीलता।

रसद वि. (तत्.) रस देने वाला, स्वादिष्ट, सरस, सुखद, आनंददायक स्त्री. (अर.) खाद्य वस्तुएँ, खाद्य-सामग्री, वे खाद्य पदार्थ जो यात्री, सैनिक आदि प्रवास काल में साथ ले जाते हैं।